युवा पाठकों के लिए प्रकृति की कहानियाँ
एक अजीब मांग
विद्या और राजाराम शर्मा

युवा पाठकों के लिए प्रकृति की कहानियाँ

एक अजीब मांग

विद्‌या और राजाराम शर्मा

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A PARTNERSHIP FOR TEACHERS, CHILDREN AND EDUCATION

यह कहानी 2011 - 2017 के दौरान दक्षिण दिल्ली में एक संस्था के परिसर में किए गए अवलोकनों पर आधारित है.

कहानी में जिस घोंसले का ज़िक्र है वो 20 फरवरी 2012 को शुरू हुआ था.

इस पुस्तक में फोटो पक्षियों या उनके घोंसलों के वास्तविक आकार को न दिखाएं.

http://vidyaonline.net

"बंद करो!"

मैंने मुड़ कर देखा पर कोई नहीं मिला.

"अजीब बात है," मैंने खुद से कहा, "क्या मैं सिर्फ कल्पना कर रही हूं या फिर मैंने सच में किसी को सुना है!"

जैसा मैं आगे बढ़ी, मैंने फिर से वही प्रार्थना सुनी.

जब मैं दूसरी बार मुड़ी, तो मैंने बहुत सारे पक्षी देखे जो मुझे निहार रहे हैं. उनमें तीन बबूना (व्हाइट आइ), धयल (मैगपाई रॉबिन), रेडवेंटेड बुलबुल की एक जोड़ी, एक दर्जिन (टेलरबर्ड) और फ़ाक्ता (रिंग-नेक्ड डॉव), मैना की एक जोड़ी और एक भूरे रंग के सिर वाली ठठेरा (बार्बेट) भी हैं. वे सभी मुझे करीब से घूरे रहे हैं!

अगर कोई आपको इस तरह घूरे तो अच्छा नहीं लगता है, और मुझे बहुत असहज महसूस हुआ.

मैंने उन्हें कुछ मूर्खता से देखा. मैं आश्चर्य कर रही थी कि उन सभी ने अपना काम बंद करके क्यों मुझे पर इस तरह की निगरानी रखी थी.

"उसकी बात सुनो," व्हाइट आई ने नम्रता से आग्रह किया.

व्हाइट आई बहुत छोटे पक्षी होते हैं, शायद दर्जिन से थोड़े से बड़े. वे कभी एक जगह शांत नहीं बैठते और हमेशा इधर-उधर फुदकते रहते हैं.

White Eye

मुझे हमेशा आश्चर्य होता है कि ज़रुरत पड़ने पर वे अपने खाने की चीज़ें कैसे ढूँढ़ते होंगे, और धीमे हुए बिना उन्हें कैसे खाते होंगे. लेकिन यहाँ वे तीन थे, जो बिल्कुल चुप बैठे थे और उनमें से एक मुझसे रुकने की याचना कर रहा था!

"किस को सुनूं?" मैंने पूछा, और उस बड़ी असामान्य स्थिति को समझने की कोशिश की.

"मुझे ... आप देखें, मेरी पत्नी को उसकी ज़रुरत है," एक छोटे पक्षी ने मुझे नम्रतापूर्वक कहा. वो पक्षी मुझे कुछ अजीब या बीमार या दोनों लगा. कुछ देर के लिए मैं अवाक रह गई.

जब मैं बोल पाई तो मैंने पूछा कि उसकी पत्नी कौन है और उसका जवाब सुनकर अनियंत्रित रूप से ठहाका मारकर हंसने लगी.

“हो... हो! ज़रा खुद को देखो!" मैंने कहा, "तुम ... एक शक्करखोरा (पर्पल सनबर्ड)? ऐसा कौन कहता है?”

तभी लेडी पर्पल सनबर्ड अपनी चोंच में एक छोटे धागे के टुकड़े के साथ वहां आई. "तुम उसे परेशान मत करो," उसने गरजकर कहा.

Lady Purple Sunbird

उसकी डांट इतनी गंभीर थी कि उसकी चोंच से धागा गिर गया. उसे किससे ज़्यादा परेशानी हुई, यह मुझे नहीं पता क्योंकि वो तुरंत उड़ गई. तब मिस्टर पर्पल सनबर्ड मधुमालती की बेल पर काफी उदास बैठे रहे.

मुझे क्या करना था? मैंने बिना कोई निर्णय लिए वहां प्रतीक्षा की. लेडी पर्पल सनबर्ड दुबारा प्रकट हुई, इस बार कुछ सूखी घास के साथ! "विच" की आवाज़ करके वो सीधी सघन बेल के बीच में गायब हो गई.

इससे पहले कि मैं देख पाती कि वह कहाँ घुसी, वो बिल्कुल उसी "विच" के साथ तेज़ी से बाहर निकल गई. वो इतनी तेज़ी से आई-गई कि मुझे यह समझ में ही नहीं आया कि मैं कहाँ देखूं.

"चलो!" मैं चिल्लाई. "यहाँ ज़रूर कुछ बात है."

कोई बड़ी अटकल नहीं लगानी थी. वो घोंसला बना रही थी. पर कहाँ? मैंने उलझी हुई बेल में झाँका. हालांकि अब ज्यादातर पत्ते झड़ चुके थे, बस कुछ लाल रंग के चमकदार नए कल्ले यहां-वहां दिख रहे थे, पर मुझे कोई घोंसला नहीं मिला.

Coppersmith Barbet

जनवरी और फरवरी के शुरुआती दिन आमतौर पर बहुत ठंडे होते हैं. तब पक्षियों की बहुत कम आवाज़ सुनाई देती है. पर दिन गर्म होने के साथ-साथ एक-एक करके उनकी आवाज़ें सुनाई देती है. बार्बेट, हॉर्नबिल, पाइड मैना, रिंग-नेक्ड डॉव, मैगपाई रॉबिन और फिर छोटे-छोटे पक्षी — बुलबुल, पर्पल सनबर्ड, प्रिनिया . फिर मध्य फरवरी तक, हवा में वसंत की खुशबू आते ही, पक्षी एक बार फिर से कलरव करने लगते हैं.

चिड़ियों के कलरव के साथ-साथ घोंसलें बनाने का समय आता है. यह मुझे अच्छी तरह पता है. क्योंकि मैंने खुद कितने सारे घोंसले खोजे थे! पर यहाँ मैं पूरी तरह से फेल हुई. एक चिड़िया ठीक मेरी नाक के नीचे घोंसला बना रही थी और वो मुझे मिल नहीं रही थी!

सौभाग्य से, लेडी पर्पल सनबर्ड लौटकर आई. इस बार वो कहाँ गई वो मैंने ध्यान से देखा.

"कोई अचरज नहीं!" पूरी तरह से संतुष्ट होकर मैंने कहा. मैं एक घोंसले की तलाश में थी. सनबर्ड के थैलानुमा घोंसले का दरवाज़ा एक हुड से सुरक्षित होता है. वो झूलता रहता है. लेकिन जो मैंने यहां देखा, वो वैसा बिल्कुल नहीं था; बस कुछ धागे, छाल के टुकड़े, कागज के टुकड़े और कुछ कबाड़. उसमें कोई थैला और सुरक्षा हुड नहीं था. घोंसला बस शुरू हो रहा था. कोई आश्चर्य नहीं कि मेरी निगाह उस पर नहीं गई.
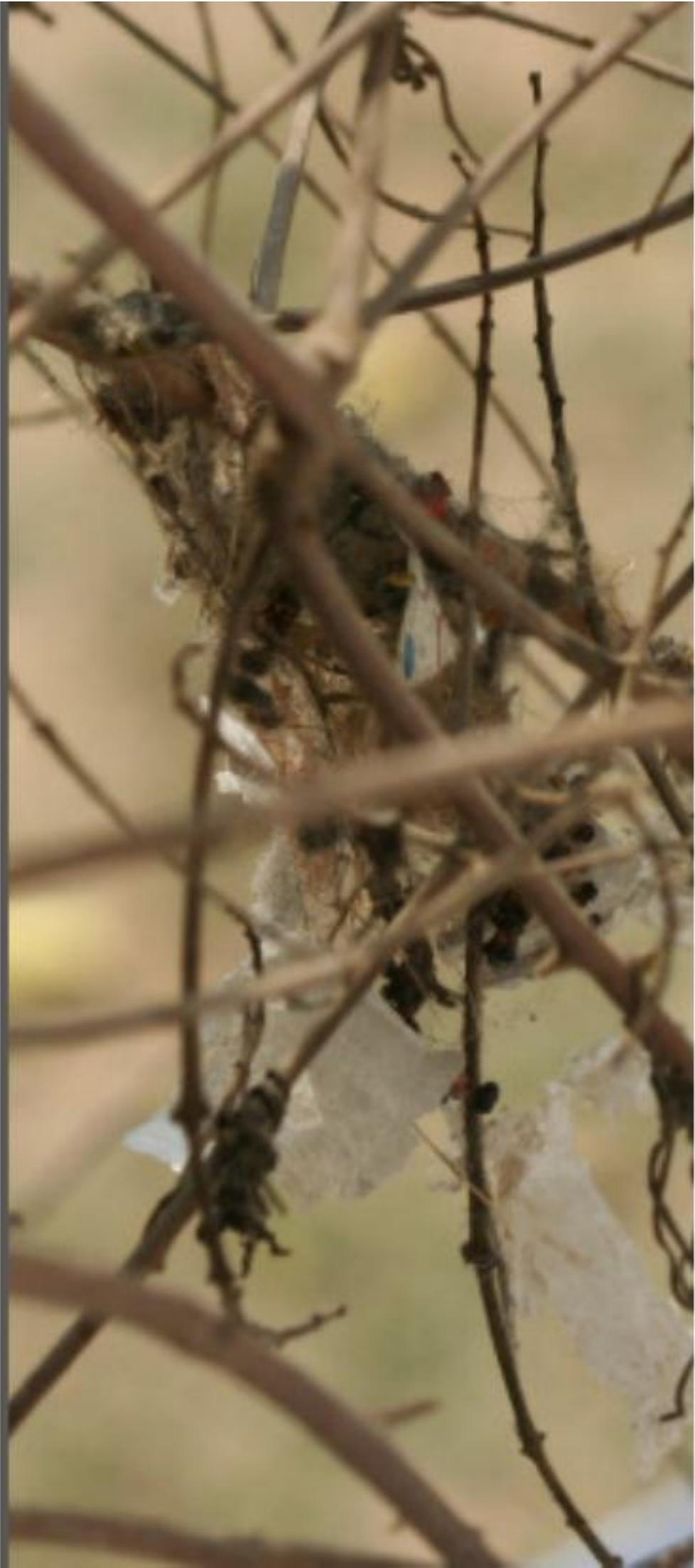
"अभी उसे बहुत काम करना है," मैंने खुद से कहा.

"हाँ. शायद दो हफ्ते! मतलब -"

"दो हफ्ते?" मैंने बुलबुल को बीच में टोका.

"आपको क्या उम्मीद थी? दो महीने!" टेलरबर्ड ने ताना मारते हुए कहा.

"अरे! चुप रहो," बुलबुल ने टेलरबर्ड को डांटते हुए मुझे समझाने की कोशिश की. “वो नन्ही चिड़िया, हम सब से छोटी है. भला वो कितना भार ढो सकती है? और उसका घोंसला निश्चित रूप से काफी जटिल है! वो - "
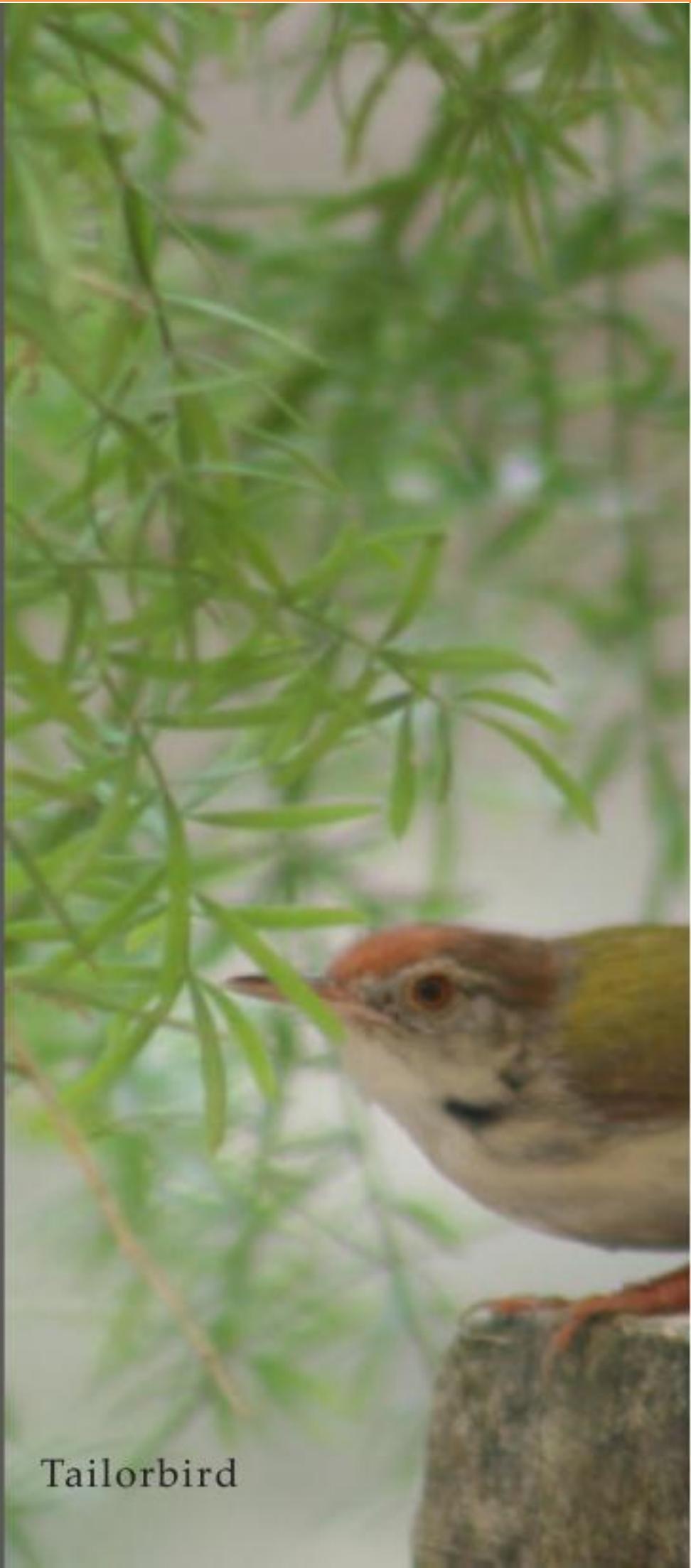
Tailorbird

इस बार बुलबुल को, व्हाइट आई ने टोका: “उस हिसाब से दो हफ्ते, काफी कम समय है. वो हम से कुछ अलग है. वो खुद अकेले ही पूरा निर्माण करती है. लेकिन आप चाहें तो उसकी कुछ मदद कर सकती हैं. कृपा घोंसले की सामग्री की तलाश में उसे बहुत दूर जाने को मज़बूर न करें," उसने विनती की और मुझे उम्मीद की नजर से देखा.

"क्या! तुम मुझ से उम्मीद करती हो कि मैं उसके लिए यह सब कचरा इकट्ठा करूं," मैंने अविश्वास से पूछा.

स्तब्ध मौन. सभी ने खुले मुंह से मुझे ताका.

बारबेट ने मुझे एक ऐसी नज़र से देखा जैसे मैं बिल्कुल मूर्ख हूँ. और फिर वो वहां से उड़ गई.

उनमें से बाकी सब पक्षियों की अचानक किसी पत्ते या कीड़े में दिलचस्पी जागी, या उन्हें कुछ और याद आया.

रिंग-नेक्ड डॉव को लगा जैसे उसका वो श्रृंगार का वक्त हो और फिर उसने खुद को ज़ोर से सजाना-संवारना शुरू कर दिया. चाहें वे कुछ भी कर रहे हों उससे कोई फर्क नहीं पड़ा क्योंकि उन सब ने मुझ पर अपनी नज़र गड़ाए रखी.

Ring-necked Dove

"मूर्ख पक्षी," मैंने खुद से कहा और उन्हें अनदेखा किया.

लेडी पर्पल सनबर्ड एक छाल का टुकड़ा लेकर लौटी.

"क्या मिस्टर पर्पल सनबर्ड बीमार हैं?" मैं फुसफुसाई.
मैं नहीं चाहती थी कि वो मुझे सुन सके.

"नहीं ... वो अपने कपड़े बदल रहा है," उसे बस इतना ही
कहने का समय मिला.

वो अपनी चोंच में कुछ-न-कुछ दबाए अंदर-बाहर उड़ने में बहुत व्यस्त थी. लेकिन हर बार जब वो वापस लौटती, तो मुझे मिस्टर पर्पल सनबर्ड की अजीबो-गरीब ड्रेस के बारे में बताने के लिए वो एक सेकंड के लिए ज़रूर रूकती थी. उसने इतने कम शब्द इस्तेमाल किए कि मुझे उन्हें समझने के लिए संघर्ष करना पड़ा. अंत में, मैंने सब कुछ एक साथ जोड़कर समझा.

मिस्टर पर्पल सनबर्ड का रंग हमेशा बैंगनी नहीं होता है. लेकिन घोंसला बनाने के समय वो बैंगनी हो जाता है. बाकी समय वो भी लेडी पर्पल सनबर्ड की तरह ही दिखता है. लेकिन लेडी पर्पल सनबर्ड की पोशाक हमेशा वही रहती है.
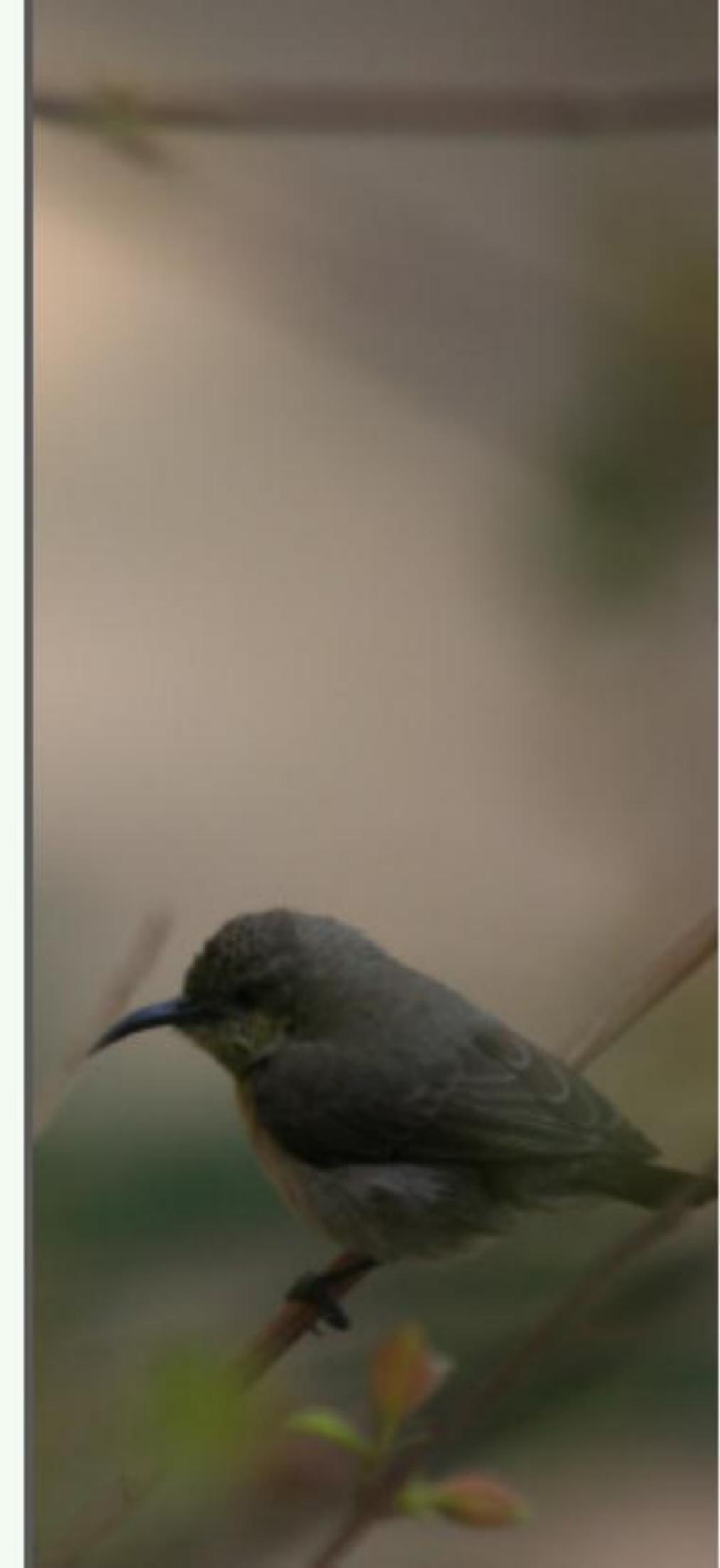
"तो क्या वो जल्द ही समान रूप से बैंगनी हो जाएगा?" मैंने पूछा यह पक्का करके कि मिस्टर पर्पल सनबर्ड कहीं आसपास तो नहीं थे.

“समान रूप से बैंगनी? हाँ और न,” लेडी पर्पल सनबर्ड ने घोषणा की.

मैंने जोर से एक आह भरी. काश, पक्षी थोड़ा बेहतर समझा सकते!

मिस्टर पर्पल सनबर्ड थोड़ी देर बाद वापस आए. मैंने उनपर हंसने के लिए माफी मांगी. "मैं पक्षियों के बारे में बहुत ज्यादा नहीं जानती हूँ," मैंने समझाने की कोशिश की.

और तब वो गुस्सा हुए. बेहद गुस्सा. "अगर आप को परवाह होगी, तो ज़रूर जानेंगी!" उसने डांटते हुए कहा. "अगर आप परवाह करेंगी, तो फिर चीज़ों के साथ छेड़छाड़ नहीं करेंगी."

"लेकिन.....मैंने क्या किया है?" मैंने अपनी उलझन दर्शाते हुए कहा.

मिस्टर सनबर्ड इतने गुस्से में थे, कि वो कुछ और कह नहीं सके.

मैंने हर तरफ देखा. दूसरे पक्षी मुझे घूर रहे थे. वे सभी गुस्से में थे. मुझे यह पता नहीं चला कि वे मुझसे क्यों नाखुश थे. मैं बेहद दुखी हुई. मैं अब क्या करूं? मुझे पता नहीं था.

गहरी सोच में, मैंने चुपचाप लेडी पर्पल सनबर्ड को अपना घोंसला बनाते हुए देखा. उसने वही प्रक्रिया दोहराई. घोंसले के पास आने से पहले एक-दो "विच" की आवाज़, फिर लाई हुई चीज़ को रखकर, उसमें बिना समय खर्च करके उसी जल्दबाज़ी में "विच" कह कर वो बाहर उड़ जाती. मैं हैरान थी कि घोंसला उन चीज़ों से एक-साथ कैसे जुड़ा था. घोंसले में से कुछ भी नीचे नहीं गिरा था!

हालांकि वो अकेले काम कर रही थी, लेकिन मिस्टर पर्पल सनबर्ड पूरी प्रक्रिया पर अपनी नज़र रखे थे. कभी ऊपर के तार पर, कभी बेल पर और कभी पत्नी की अनुपस्थिति में वो काम की जाँच करते रहते थे.

कई बार, वो अपनी पत्नी के साथ आते और घोंसले के करीब आकर बैठते. तब वो खुशी-ख़ुशी उसके साथ बातचीत करते, नरम और अच्छे लहज़े में. लेकिन कभी-कभी, जब वो बहुत दूर होती, तो वो तेजी से अपने पंख फड़फड़ाते हुए ऊंचे सुर में आवाज़ करते. शायद वो पत्नी से तेजी से काम करने को चिल्ला रहे थे, लेकिन मुझे लगता है कि वो बहुत उत्साहित थे और फिर शब्द अनायास बड़ी तेजी से उनके मुंह से बाहर निकल रहे थे.

और फिर कुछ अजीब हुआ.

हर बार लेडी पर्पल सनबर्ड की चोंच में कुछ होता था, पर इस बार कुछ भी नहीं था. अन्य मौकों के विपरीत, इस बार वो लंबे समय तक घोंसले में रही. वो घोंसले के शीर्ष पर चढ़ गई, जहाँ वो बेल से लटका था और फिर उसने घोंसले के चारों ओर अपनी चोंच चलाई. उसकी चोंच गोल-गोल चली. यह काफी समय तक चलता रहा. फिर वो घोंसले से दूर गई, उसने बेल से अपनी चोंच रगड़ी और फिर उड़ गई.

"अजीब!" मैं जोर से चिल्लाई. वो क्या कर रही थी वो मुझे कुछ समझ में नहीं आया.

शुक्र है, तभी मिस्टर पर्पल सनबर्ड वहां पहुंचे और मैंने तुरंत उनसे पूछा कि लेडी पर्पल सनबर्ड क्या कर रही थी.

उसने मुझे देखा, अविश्वास में अपना सिर हिलाया और धीरे से कहा, "आपको अनुमान लगाना चाहिए ... वो लपेट रही थी; ... वो मकड़ी के जाले लपेट रही थी."

"वाह!" मैं उसके अनुरोध को याद करते हुए रुक गई.

मकड़ी का जाला! उसने सही कहा, मुझे खुद उसका अनुमान लगाना चाहिए था!

मैं कितनी बेवकूफ़ हूँ. और वो कितनी चतुर है. भला वो सब कचरा एक-साथ कैसे चिपकता? मकड़ी के जाले से! वो उसके लिए बेहद कीमती था और मेरे लिए बिल्कुल बेकार था. कोई आश्चर्य नहीं कि अन्य पक्षी मेरे खेलने और मकड़ी के जाले साफ करने से नाखुश थे. मुझे भले ही कुछ बदसूरत लगे, लेकिन पक्षी उसे सुंदर मानते हैं. अगर कोई चीज़ मुझे कोई नुक्सान न पहुंचा रही हो, फिर मुझे उसे नहीं साफ़ करना चाहिए.
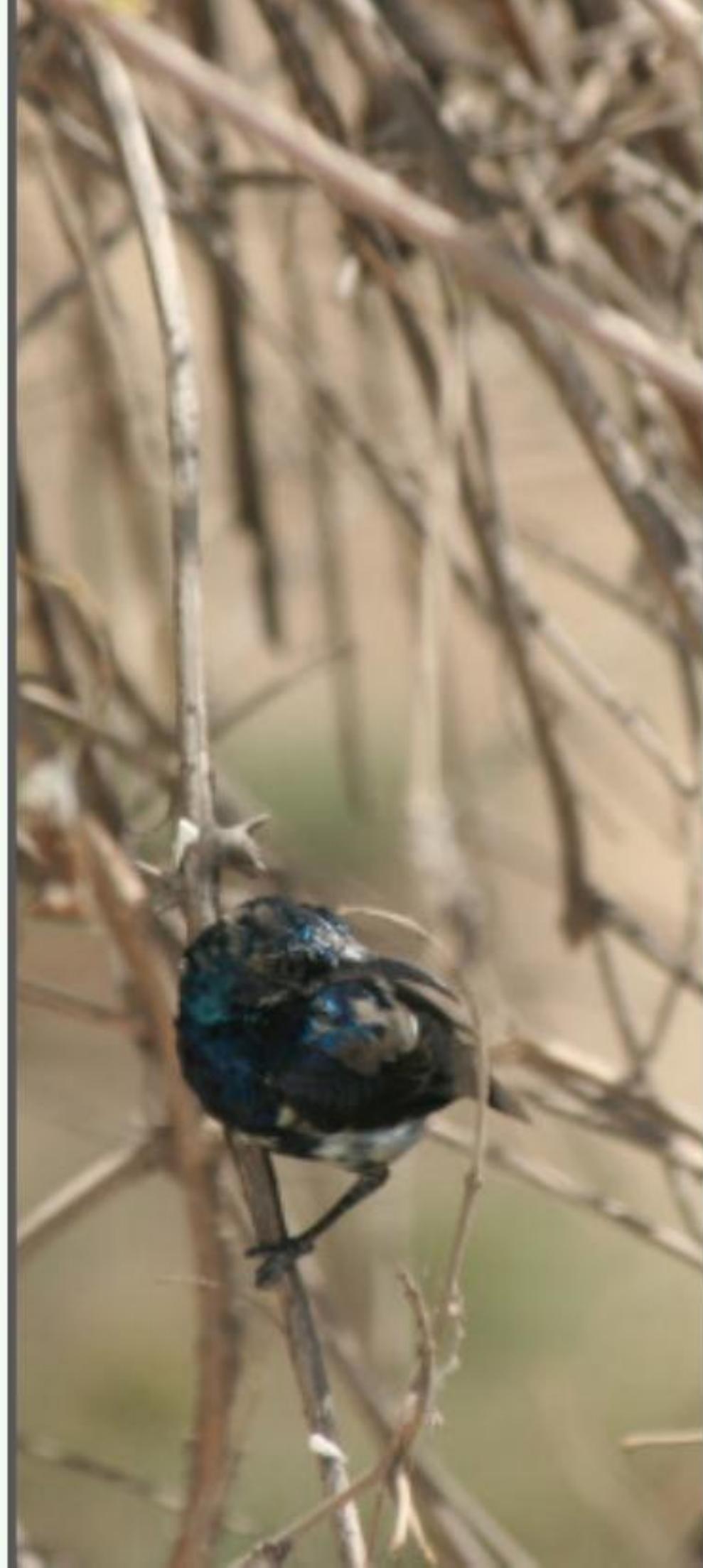
मैंने मिस्टर पर्पल सनबर्ड पर नज़र डाली. वह मुझे गौर से देख रहे थे. मैंने चुपचाप उससे एक वादा किया, जिसे उसने चुपचाप स्वीकार किया.

बाकी पक्षी अब आराम से सुस्ता रहे थे. वे मुझ से अपना वादा निभाने का भरोसा कर सकते थे.

समाप्त
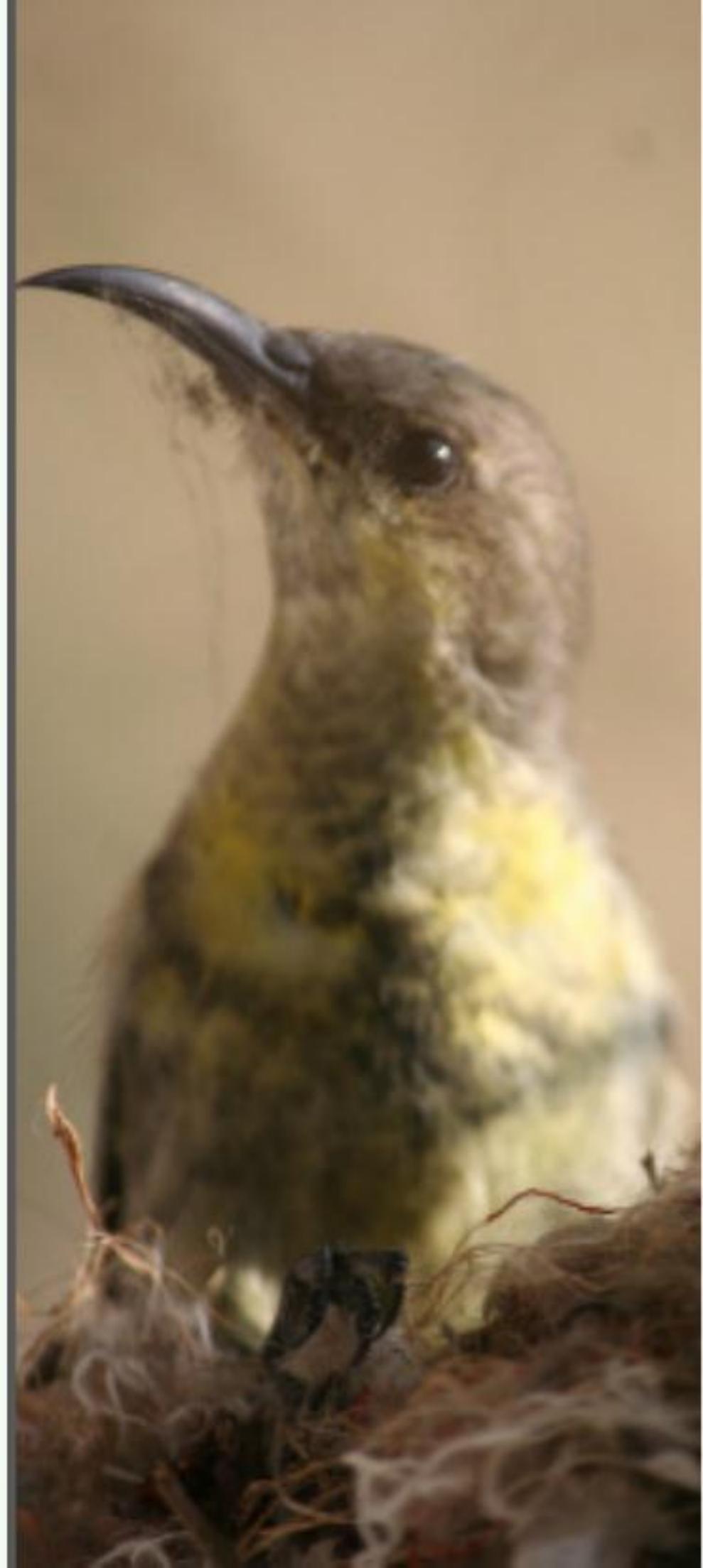
अंत के शब्द

मार्च के पहले सप्ताह में, घोंसला पूरा होने तक मिस्टर पर्पल सनबर्ड ने अपनी पूरी बैंगनी पोशाक हासिल कर ली थी.

मधुमालती की बेल (रंगून-क्रीपर) में भी बहुत नई पत्तियां आ गई थीं. लेडी पर्पल सनबर्ड कितनी चतुर थी. उसने अपना घोंसला बनाने के लिए सबसे अच्छा स्थान चुना था; जो अच्छी तरह से पत्तियों से छिपा हुआ था और ऊंचाई पर होने के कारण बिल्लियों से भी सुरक्षित था!
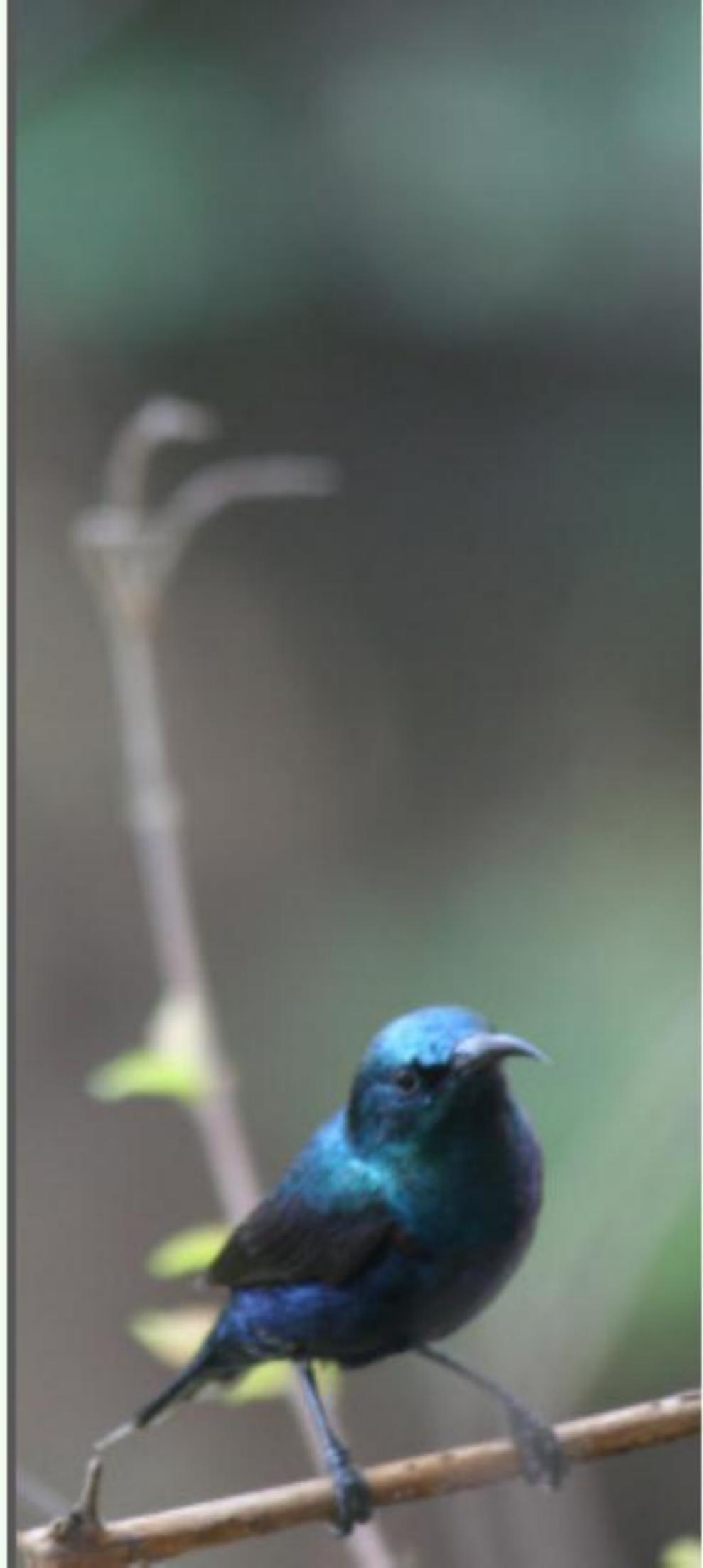
Other titles

JUST A GOOD DEED

SWORN TO SECRECY

THE MUD CONNECTION

FINDING THE COPPERSMITH

AND SHE SHOWED THE WAY

THE LONG AND SHORT OF IT

MYSTERY OF THE FOUR EGGS

BIRDS OF DIFFERENT FEATHERS

OWNERS AND APPROPRIATORS

A PARTNERSHIP FOR TEACHERS, CHILDREN AND EDUCATION

Visit http://vidyaonline.net for more titles